JSL, 9(12), Dec 2024: 01-17

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

JOURNAL OF SCIENTIFIC LETTERS
www.jslsci.com

प्राचीन आभूषणों का समकालीन आभूषणों से तुलनात्मक अध्ययन

पूजा

शोधार्थी, स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड कल्चर, विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर

डॉ. देवेंद्र कुमार

प्रोफेसर, स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड कल्चर, विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर

सार

श्रृंगार की प्रबल भावना के कारण ही आभूषणों का निर्माण तथा उसमें निरन्तर विकास हुआ। यही कारण है कि विश्व के सभी देशों, जातियों एवं सभ्यताओं में आभूषण धारण करने की परम्परा प्रारम्भ से मिलती आई है। आभूषण नख से शिख तक के सभी अंगों में धारण किये जाते रहे हैं। मनुष्य इसके निर्माण के माध्यम में किसी धातु विशेष के प्रति आग्रह नहीं रहा है। मनुष्य समय व परिस्थितियों के आधार पर ही इनके उपादान का चुनाव करता आया है। यही कारण है कि घास, पुष्प, हड्डी एवं शीशे से लेकर काँस्य, पीतल, चाँदी, सोने एवं रत्नों आदि तक के आभूषणों का प्राचीन काल से निर्माण होता आया है। भारत में प्राचीन काल से ही सभ्यता के विभिन्न स्तरों में आभूषणों के प्रति लोगों में विशेष सम्मान रहा है।

सूचक शब्दः- प्राचीन, आभूषणों, समकालीन, तुलनात्मक

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

आभूषण अलंकरण के बदलते स्वरूप

भारतीय चित्रकला और मूर्तिशिल्प में बने आभूषण अलंकरण में विभिन्न प्रकार के विषय वैविध्य देखने को मिलते हैं। परन्तु इन दोनों कलाओं का उद्देश्य आकृतियों में सौन्दर्य को उभारने का है। जिसमें शीश के सुन्दर आभूषणों से लेकर कर्ण, कण्ठ, हाथों, नितम्ब व पैरों पर बने अलंकृत चमकीले स्वर्णिम आभूषण शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि करते प्रतीत होते हैं। जिस प्रकार नृत्य और संगीत हमारी सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक है। जिसका प्रयोग प्राचीन काल से देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के उद्देश्य से किया जाता रहा है। उसी प्रकार चित्रकला और मूर्तिशिल्प में कलाकारों का उद्देश्य आंतरिक भावनाओं का प्रस्तुतिकरण है। इन दोनों कलाओं में आकृतियों के सौन्दर्य हेतु आभूषण अलंकरणों का प्रयोग देवी-देवताओं, राजा-रानी व सामान्य जन-जीवन के लिए प्राचीन काल से होता आया है।

कलाकार प्राचीन काल से समस्त प्रकृति का चित्रण अलंकारिक रूप से करता आया है। किन्तु आकृति चित्रण से चाहे व चित्रकला हो या मूर्तिकला दोनों में कलाकार ने उसी मुद्राओं, अंग-भंगिमाओं आदि सभी में अलंकारिता के साथ-साथ स्वाभातिकता लाने का भी प्रयास किया है। प्रकृति के विभिन्न उपदानों को प्रतीक मानकर मनुष्य के अंग प्रत्यंग की रचना बड़ी कुशलता के साथ की गई है। प्राचीन काल से ही कलाकार नारी की प्रस्तुति व चित्रण बड़े अनोखे ढंग से करता आया है। जिसका प्रमाण हमें सैन्धव सभ्यता से लेकर गुप्त काल तक की अनेक मूर्तिशिल्पों में देख सकते है। नारियों की वेशभूषा और श्रृंगार से उसके वर्ग का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है। जिस प्रकार देवियों को मुकुट धारण किए बनाया गया है उसी प्रकार राजवंशीय, राजकुमारी कन्याओं को बहुमूल्य रत्नों से सुसज्जित आभूषण अलंकरण पहने बनाया गया है। समाज के मध्य व नीचे वर्ग द्वारा धारण आभूषण उनको उच्च वर्ग से भिन्न करते है। कलाकार ने नारियों की शारीरिक सौन्दर्य पर विशेष ध्यान न देकर उसके आन्तरिक सौन्दर्य को निखारने की हमेशा से चेष्टा की है।

आभूषण अलंकरण के सर्वप्रथम प्रमाण हमें सैन्धव सभ्यता से मिलते है। जिसमें मिट्टी के कलशों पर चित्रित आभूषणों के नमूने उस समय के मनुष्य का आभूषणों के प्रति रुचि को बताते हैं। यह शव पात्रों पर चित्रित ज्यामितीय आकृतियाँ यथा सरल रेखाओं, वृत्तों, कोणों, वर्गों, त्रिभुज, डायमण्ड, चतुर्भुज, सम-चतुर्भुज आदि को बहुतायात से बनाया गया है। इन सभी ज्यामितीय रेखाओं की सहायता से उस समय मनुष्य ने आभूषण अलंकरण का विकास किया। जो वहाँ से प्राप्त मृण्मूर्तियों व आभूषणों के उत्खननों में देख सकते हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त अधिकांश मातृदेवी की मूर्तियों के शीश पर पंखेनुमा मुकुट, गले से चिपटे कण्ठहार व

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

प्रालम्ब हार जो सपाट मोटी रेखाओं द्वारा बनाए गए हैं। इन कण्ठाभूषणों में कहीं-कहीं मनकों का भी अलंकरण किया गया है। इस प्रकार के मुकुट राजस्थानी व पहाड़ी शैली में भगवान कृष्ण को पहने बनाया गया है जिनके ऊपर मोरपंख व नीचे स्वर्ण धातु का अलंकरण है।

आभूषण अलंकरण के बदलते स्वरूप

आज बेशक हम 21वीं शताब्दी में प्रवेश कर गये हो पर सौन्दर्य के प्रति हमारा नजरिया वहीं है। चाँद, मोर, फूल, चिड़ियाँ, जानवर ये सारे प्राचीन प्रतीक बदले रूपों में आज भी हमारे अलंकरणों में कहीं न कहीं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में दिखाई देते हैं। वस्तुतः हमारे पुराने सौन्दर्य प्रतीक नए-नए रूपों में आज डिजाईन के रूप में हमारे समक्ष उपलब्ध है और इंटरनेट व बाजारों में तलाश करने पर इनकी कोई कमी नहीं है।

आजकल अधिकांश महिलाएँ कामकाजी होती है वे एक साथ दोहरे जीवन को जीती हैं घर हो या नौकरी। जिस कारण पारम्पारिक श्रृंगारित वस्तुओं को छोड़कर वो कम समय में अधिक आकर्षित दिखने वाली वस्तुओं पर अधिक आकर्षित होती हैं। जैसे कानों में बालियों की जगह ‘स्टड’ जो केवल हुक के सहारे कानों में डाले जाते हैं, गले में हार की जगह चेन जो पतली लॉकेट के साथ विभिन्न डिजाइनों के साथ बाजारों में उपलब्ध है। हाथों में कंगन की जगह ‘ब्रेसलेट’ तथा अंगुलियों में गोल छल्लेनुमा व आकार में मोटी-मोटी अंगूठियाँ आजकल काफी पसन्द की जा रही हैं। ये सभी आभूषण मिश्रित धातुओं से बनाए जाते हैं। जिनकी बाजार में कीमत बहुत कम होती है। परन्तु यह आभूषण महिलाओं की खूबसूरती में चार चाँद लगा देते हैं। महिलाओं के समान पुरूषों द्वारा पहने जाने वाले आभूषण नए ट्रेंड के तौर पर उभर कर हमारे सामने आ रहे हैं। फैशन के इस नए ट्रेंड में सबसे ज्यादा प्रचलित आभूषणों में गले की स्नेक चेन, हाथों में ब्रेसलेट, कानों की छोटी बालियाँ या स्टड और हाथों की अंगुलियों में विभिन्न धातुओं की मोटी-मोटी अंगूठियाँ ये सभी आभूषण आज के युवा समाज के पुरूष की छवि को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है।

हल्के-फुल्के आकर्षक आभूषण

हल्के-फुल्के आभूषण स्वर्ण रत्नों, मोतियों, चाँदी व मिश्रित धातु से निर्मित आज के युग के आकर्षक आभूषणों में से एक हैं। आजकल की महिलाएँ कामकाजी होने के कारण उनके पसन्द सर्वप्रथम हल्के-फुल्के आभूषण हो गई। भारी, जड़ाऊ एवं पारम्परिक आभूषण खरीदना और पहनना आज के समय में सहज नहीं है।

Impact Factor: 6.004

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

इसलिए नयी पीढ़ियाँ हल्के, कम कीमती, परन्तु दिखने में अधिक आकर्षक व हल्के-फुल्के आभूषणों को अधिक प्राथमिकता दे रही है।

स्टाइलिश हेयर ज्वेलरी

हेयर को अधिक आकर्षक व स्टाइलिश बनाने के लिए आज के युग में अलग-अलग तरह के हेयर सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है। जिसमें एथनिक मांगटीका, झूमर, स्पार्कल हेयर बैन्ड, सिंगल लेयर हेयर बैन्ड, हेयर कोंब पिन, चेन मांगटिका, जुड़ा हेयर चेन व फूल जुड़ा, केश सज्जा के लिए मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा पसन्द किए जा रहे हैं।

जड़नाग व जड़ई-हू दक्षिणी भारत में केश सज्जा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आभूषण है जिसमें फूलों, मोतियों, स्वर्ण चेनों से निर्मित डिजाईनों से चोटी की सज्जा की जाती है।

वेस्ट चेन

वेस्ट चेन अपने आप में एक कलात्मक ज्वेलरी है। जिसे आजकल की लड़कियाँ इसलिए अत्यधिक पसन्द करती है। क्योंकि यह उनके पारम्परिक रूपों को एक नया आधार प्रदान करती है। अगर वेस्ट चेन के प्रकारों पर नजर डाली जाए तो हमें पता चलेगा कि आजकल कोस ओवर वेस्ट चेन, पर्ल वेस्ट चेन, डबल लेयर वेस्ट चेन, एंटीक गोल्ड चेन, चमड़ा गोल्ड चेन आदि प्राथमिक तौर से बाजारों में छाई हुई है। गोल्ड चेनों के समान आजकल बाजारों में नकली गोल्ड चेनों का भी काफी चलन है जो हूबहू गोल्ड चेन के समान दिखाई देती है।

नैकलेस

बदलते समय के साथ-साथ गले में पहनने वाले हारों को भाषा में नैकलेस कहा जाने लगा। जिसमें प्रिंसेस नैकलेस, बिब नैकलेस, मैटिनी नैकलेस, डॉग कॉलर नैकलेस, ओपेरा नैकलेस, बहुरंग का स्ट्रिंग नैकलेस, धागा नैकलेस, चोकर नैकलेस आदि विशेष रूप से पसन्द किए जाते हैं।

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

ईयर रिंग्स

ईयर रिंग्स फैशन ज्वेलरी का एक ऐसा हिस्सा है जो कि महिलाओं के चेहरे को सम्पूर्णता प्रदान करता है। हल्के ईयर रिंग्स में स्टड, हूप, दंगल, ड्रांप, पेपर, धागे, पत्थरों से बनने ईयर रिंग्स महिलाओं व बालिकाओं द्वारा विशेषकर पसन्द किए जाते हैं।

रिंग्स

रिंग्स या अंगूठियाँ प्राचीन समय में अधिकतर रत्नों व धातुओं से बनाई जाती थी। परन्तु आजकल हल्के डिजाईनों को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा है जिस कारण शादी व सगाई में हार्टशेप रिंग, प्रिंसस कट रिंग, कुशन कटरिंग रेडिएंट कट रिंग की खास माँग की जा रही है।

एंकलेट

यदि सरल भाषा में परिभाषित किया जाए तो एंकलेट पायल का आधुनिक विकल्प है। आजकल महिलाएँ अलग-अलग तरह के एंकलेट को पहनना अधिक पसन्द करती है। एंकलेट में चेन एंकलेट, हार्ट एंकलेट, फ्लोरल एंकलेट, कुन्दन एंकलेट, मोती व चाँदी से युक्त एंकलेट सबसे अधिक प्रयोग में लाये जाते हैं। वे जमाने गये जब महिलाएँ भारी और बड़े गहने पहनना शान की बात मानती थी, लेकिन समय के बदलाव के साथ यह सोच भी बदल रही है। आज की पढ़ी-लिखी और कामकाजी महिलाओं को आज हल्के और छोटे गहने पहनना पसन्द है। इन गहनों को वो आसानी से पहन भी पाती है और संभाल भी सकती है। युवतियों को पसन्द को ध्यान में देखते हुए आभूषण व्यापारी बनावट को लेकर खास ध्यान रखते हैं और हर बार कुछ नया करने की कोशिश में लगे रहते हैं।

मानवीय जीवन में आभूषण अलंकरण

हमारी वैदिक परम्परा के अनुसार जीवन में 16 संस्कार होते हैं। ये संस्कार व्यक्ति को मर्यादित और संस्कारित करते हैं। इन सभी संस्कारों का आयोजन मनुष्य बड़ी धूमधाम से करता है, इनको एक धार्मिक उत्सवों के रूप में मनाता है। इसमें एक संस्कार आभूषण की परम्परा से भी जुड़ा हुआ है और इसका महत्त्व भी जन्म, विवाह और मृत्यु जैसे संस्कारों के समकक्ष माना जाता है। इसे कर्णछेदन संस्कार कहते हैं। आभूषण का सीधा-सीधा सम्बन्ध शरीर से होता है। शरीर के विभिन्न अंगों की स्थिति भिन्न होती है, और इन्ही स्थिति

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

को ध्यान में रखकर ही आभूषण तैयार किए जाते हैं। हाथ, पांव और गले के गहने इस प्रकार पहने जाते हैं कि इन्हें अलग से बांधना नहीं पड़ता और कमर तथा सिर के गहनों को बांधने की आवश्यकता पडती है। जबकि कान और नाक के गहनों में छेद करना आवश्यक है।

आभरण (अलंकरण) विधियों का वर्गीकरण करते हुए भरतमुनि ने अनके चार प्रकार बताये हैं-

- आवेध्य
- बन्धनीय
- प्रक्षेप्य
- आरोप्य

अंगों को बींधकर धारण किये जाने वाले आभूषण 'आवेध्य' होते हैं जैसे कुण्डल, नथ आदि। शरीर पर आरोपित किये अलंकार 'आरोप्य' कहलाते हैं जैसे-हेमसूत्र, मणिलाल, हार आदि। 'बन्धनीय' बाँधकर पहिने जाने वाल गहनों को कहते हैं। जैसे-केयूर, अंगद, करधनी आदि एवम् 'प्रक्षेप्य' शरीर से सटाकर पहिने-उतारे जाने वाले आभूषण होते हैं जैसे अंगूठी, नुपूर, बिछिएँ आदि।

नाट्यशास्त्र और अमरकोश में प्रदत्त आभूषण सूची को वर्गीकरण की दृष्टि से निम्नलिखित वर्गों में बांटा जा सकता है-

- शिरोभूषण
- कर्णाभूषण
- नासाभूषण
- कण्ठाभूषण
- हस्ताभूषण
- कटिभूषण

Impact Factor: 6.004

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

- पादाभूषण

भारतीय चित्रकला में अनेक प्रकार के आभूषणों का उल्लेख मिलता है-

- मुकुट
- कुण्डल
- गले के आभूषण
  - हार (अठारह लड़ी वाला)
  - अर्धहार (नो लड़ी वाला)
  - तिसरय (तीन लड़ी वाला)
  - एकावली (एक लड़ी वाला)
  - प्रालम्ब (नाभि तक लटकने वाला)
  - पाद प्रालम्ब (पैर तक लटकने वाला)
  - कनकावलि या रत्नावलि (मोतियों का हार)
- बाजूबन्द या अंगद
- केयूर (कड़ा)
- मुद्रिका (अंगूठी)
- कटिसूत्र (करधनी)
- नुपूर

Impact Factor: 6.004

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

भारतीय चित्रकला में स्त्री-पुरूषों दोनों को समान आभूषण पहने चित्रित किया गया है। परन्तु कुछ आभूषण विशेषकर स्त्रियाँ ही धारण कर सकती हैं। मुकुट, कण्ठहार एवं कंगन पुरूषों के प्रिय आभूषण रहे हैं। किन्तु स्त्रियों के अलंकारों की संख्या अधिक रही है। वात्स्यायन ने 'भूषण योजना' को भी चौसठ कलाओं में गिना है। शारीरिक सौन्दर्य की अभिवृद्धि के लिए आभूषणों का प्रयोग स्त्री और पुरूष दोनों ही प्राचीन काल से करते आए हैं। आभूषण विभिन्न धातुओं सोने-चाँदी, मणि-मुक्ताओं से बनाये जाते हैं। पुरुषों में शिखामणि, किरीट और मुकुट विशेष प्रचलित आभूषण है। जिसे राज परिवार के पुरूष विशेषकर पहनते हैं। कलाई के आभूषणों में कंकण और वलय थे, भुजा के आभूषणों में अंगद और केयूर थे। मुद्रिका, हार, कुण्डल आदि आभूषण स्त्री और पुरुष दोनों द्वारा पहने जाते हैं। इसके अतिरिक्त स्त्रियाँ नुपूर, मणिमेखला, कटिसूत्र, रत्नावली, एकावली एवं चूड़ामणि के साथ अन्य आभूषण भी पहनती थी। साधारण परिवारों में पुष्पों के आभूषणों का ही प्रचलन था। तापस कन्याऐं कमल पुष्पों के वलय और हार पहनती थी। पुष्प-पत्तों से निर्मित वलय, कटक, केयूर, मेखला, हार आदि आभूषण बनाए जाते थे। प्राचीन काल से ही स्त्री-पुरूष दोनों ही गहनों के शौकीन थे। स्त्रियों द्वारा नख से लेकर शिख तक आभूषण धारण करने की परम्परा प्राचीन काल से मिलती आई है।

भारतीय चित्रकला में अंकित आभूषण मानवीय जीवन में एक महत्त्वपूर्ण अंग रहे हैं। जिसमें नारी व पुरुष दोनों के अलग-अलग आभूषणों की सज्जा की गई है जिनका विवेचन निम्न प्रकार से है-

- नारी के रूपांकित आभूषण अलंकरण
- पुरूष के रूपांकित आभूषण अलंकरण

नारी के रूपांकित आभूषण अलंकरण

भारतीय कला में शारीरिक सौन्दर्य की अभिवृद्धि के लिए आभूषण अलंकरण का प्रतिपादन हुआ है। 'महापुराण' में वर्णित है कि कुलवती नारियाँ अलंकरण धारण करती हैं जबकि विधवा स्त्रियाँ इसका परित्याग कर देती हैं। भारत में श्रृंगार मंजूषा या सिंगार-पेटी का इतिहास काफी पुराना है। प्राचीन ऐतिहासिक स्थल हड़प्पा में 'श्रृंगारदान' भी मिला है एवं श्रृंगार की ऐसी मेज भी मिली है जिसमें अण्डाकार कांसे का शीशा भी लगा हुआ है। हाथीदाँत से बने कड़े भी प्राप्त हुए हैं। इनसे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

रूपशृंगार के विषय में भारतीयों की कला-चेतना हजारों वर्ष पूर्ण ही पूर्ण रूप से विकसित हो चुकी थी और बाद में भी उसका उत्तरोत्तर संवर्धन परिष्करण होता गया।

आभूषण के प्रकार

नारी आभूषणों को सुविधा की दृष्टि से निम्न वर्गों में विभाजित कर विवेचन किया गया है-

शिख (सिर) तथा ललाट के आभूषण (शिरोभूषण)

शिरोभूषण के प्राचीनतम् उदाहरण सैन्धव सभ्यता से प्राप्त होते हैं। हड़प्पा एवं मोहनजादड़ो के उत्खनन में स्वर्ण रजत आदि के आभूषण भी प्राप्त हुए हैं। इनमें स्वर्ण निर्मित कोणाकृति अलंकरण सम्भवतः स्त्रियाँ सिर पर सामने की ओर धारण करती थी। साहित्य में शिरोभूषण के विस्तृत उल्लेख मिलते हैं। स्त्रियों के लिय चूड़ामणिकारिका, मुक्ताजाल, शीर्षजाल, ललाट तिलक आदि आभूषणों की चर्चा की गयी है। भारतीय चित्रकला में नारी के रूपांकित आभूषणों में विविध प्रकार के शिरोभूषण देखे जा सकते है-

सीमन्तकमाणि, ललाटिका या माँगटीका

नारियाँ सीमन्तकमाणि अपने माथे के मध्य में धारण करती थी, जिसकों ललाटिका भी कहा गया है। आज माँगटीका के रूप में इसका प्रचलन देखा जा सकता है जिसे विवाहित स्त्रियों के लिए सौभाग्य का सूचक माना जाता है। इस आभूषण को माँग के बीच में मोतियों की लड़ियों अथवा जंजीर द्वारा लटका कर पहना जाता है। इसलिए इसे 'माँगटीका' कहते हैं। अजन्ता गुफा नं. 17 में अप्सरा और उस पर किया आभूषणों का श्रृंगार अति रोमांचकारी है। सिर पर एक ओर जूड़ा बंधा है जिसे मोतीयुक्त जाली से मध्य में सजाया गया है, आगे एक चौड़ा फीता बंधा है और अग्रभाग के मध्य में मोती की माला लटकी हुई है। गुफा नं. 2 में दो अंगूठे वाली रमणी ने मोती की माला से अपना श्रृंगार किया है ये मोती की माला मेहराब के आकार के कपाल के ऊपर लटकी हुई है। बीच-बीच में मोती की दो लड़े लटकी हुई हैं। गुफा नं. 2 में दर्पण में देखती हुई नारी का श्रृंगार आकर्षक है। सिर पर बड़ा जूड़ा बांधा हुआ है। अग्रभाग में बड़ा सा टीका है जो केश के दोनों ओर की मालाओं से जुड़ा हुआ है। टीके के मध्य भाग में मोतियों का अलंकरण है। इसके द्वारा सजाया गया है। माँगटीका का चित्रण मुख्यतः सभी शैलियों में किया गया जिसमें कुछ माँगटीका मोतियों व रत्नों से अलंकृत है तथा कुछ स्वर्ण धातु से निर्मित है राजस्थानी शैलियों में अधिकांशः माँगटीका सफेद मोतियों व रत्नों से निर्मित है। जबकि पहाड़ी शैली में मध्य में स्वर्ण धातु व बाहरी ओर मोतियों से निर्मित माँगटीका का चित्रण

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

किया गया है। राजस्थान शैलियों में चित्रित राधा-कृष्ण, राधा, ताम्बुर सेवन आदि माँगटीका व सीमन्तकमाणि का उत्तम उदाहरण है।

चूड़ामणि एवं चूलिभूषण

आचार्य भावना की पुस्तक 'प्राचीन भारत में रूप श्रृंगार' में उल्लेख हुआ है कि चूड़ामणि स्त्रियों का विशेष शिरोभूषण था। यह आभूषण तीन लड़ियों वाला है जिसकी एक लड़ी केशों के मध्य सीमान्त को सुशोभित करती हुई पीछे की ओर जूड़े तक चली गई है। शेष दो लड़ियाँ माथे को घेरती हुई मध्य वाली पहली लड़ी से पीछे की ओर मिल जाती है। इसी प्रकार का शिरोभूषण जो स्वर्ण पुष्पों से सज्जित, बड़े माणिक्य, नीलमणि और मुक्त लड़ियों से सुशोभित होकर लटकने वाला 'चूलिभूषण' कहलाता है। उक्त आभूषण का चित्रण कुछ ही शैलियों में देखा जा सकता है।

मुकुट व कलंगी

सैन्धव सभ्यता से प्राप्त मूर्तियों एवं अजन्ता के भित्ति चित्रों में देवी अथवा रानियों को शीश पर मुकुट धारण किये दर्शाया गया है। इसी प्रकार जैन शैली में देवी एवं रानी आकृतियों को विविध प्रकार के मुकुट धारण किये चित्रित किया गया है। जैन चित्र शैली के अन्तर्गत पुरूष एवं महिला दोनों में अलंकृत एवं सुसज्जित विशेषकर त्रिभुजाकार मुकुट पहिने दर्शाया गया है। ये अधिकांशतः सोने के ही बने है जिस पर जवाहरात का जड़ाऊ काम किया गया है। जबकि राजस्थानी, पहाड़ी, मुगल व दक्खिनी शैलियों में कहीं-कहीं पर ही स्त्री आकृतियों को पगड़ी पहने चित्रित किया गया है। इन मुकुट व पगड़ी के साथ कलंगी भी बनाई गई है जिसमें मोतियों के गुच्छों का जड़ाऊ काम अति सुन्दर रूप में किया गया है।

दामणी अथवा सिंगार पट्टी

यह आभूषण प्राचीन काल से स्त्रियों द्वारा धारण किया जाता रहा है। यह आभूषण राखड़ी अथवा बोर के साथ सिर पर धारण किया जाता है। दामणी को माँग के दोनों ओर पहिना जाता है। यह स्वर्ण, रजत अथवा मोतियों द्वारा निर्मित की जाती है। अधिकांश लघु चित्रों में चित्रकार ने इस आभूषण को मोतियों की लड़ी द्वारा प्रदर्शित किया है। दामणी अथवा सिंगार पट्टी को चित्रकारों ने माँग के दोनों ओर मोतियों की लड़ी द्वारा अंकित किया है। जैन, पहाड़ी व राजस्थानी चित्र शैलियों में दामणी अथवा सिंगार पट्टी का चित्रांकन देखा जा सकता है।

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

शीशफूल या सूरज

यह सोने या चाँदी का बना शिरोभूषण है जो शीश के पिछले हिस्से के बालों में पहना जाता है। यह बहुमूल्य जवाहरातों से जड़ित होता है। इसे सिरफूल, सेरज आदि नामों से भी जाना जाता है। इस प्रकार के शिरोभूषण का अंकन अजन्ता, बाघ, सित्तन्नवासल गुफाओं व तंजौर शैली के चित्रों में देखा जा सकता है।

बोरला

यह आभूषण सोने व चाँदी तथा ठोस आकृति में बना होता है। इसके अग्रभाग में छोटे-छोटे दाने उभरे हुये होते हैं तथा पृष्ठभाग में एक छोटा सा हुक होता है। जिसको नाल कहा जाता है। इस नाल में धागे को बाँधकर स्त्रियाँ अपने केशों के साथ गूंथकर मस्तक पर लगाती है। इस आभूषण का चित्रण विशेषकर राजस्थानी शैली के चित्रों में देखा जा सकता है।

राखड़ी

यह आभूषण राजस्थान में नारियों के लिए सुहाग का प्रतीक माना जाता है। गोलाकार रूप में बनी राखड़ी के आगे वाले भाग में खूबसूरत जड़ाऊ जवाहरात होते हैं तथा इसके पृष्ठभाग में एक हुक होता है जिसे नाल कहा जाता है। इस नाल में धागा बाँधकर ललाट पर लटकाया जाता है जिससे यह स्थिर रहे। जैन शैली में 'माता त्रिशला' एवं उनकी दासी के माथे पर अति सुन्दर राखड़ी पहिने अंकित किया गया है। जैन शैली की तुलना में इस आभूषण का अंकन राजस्थानी शैलियों में अधिक देखने को मिलता है जिसमें स्वर्ण धातु के साथ बहुमूल्य रत्न जड़े होते हैं। रूपाकृति की दृष्टि से रत्न के चारों ओर सफेद मोतियों का जड़ाऊ काम होता है और इसके अलंकरण के लिए स्वर्ण का प्रयोग किया जाता है।

टीडी भलका

यह आभूषण बोर अथवा राखड़ी के नीचे पहना जाता है तथा यह विभिन्न आकारो में बना होता है। यह सोने की एक छोटी सी कुण्डली होती है जिसका आकार विभिन्न प्रकार का होता है। यह राखड़ी के दोनो ओर के हुक में भी बांध कर पहना जाता है।

झेला

Impact Factor: 6.004

सोने या चाँदी की दो-तीन लड़ियाँ जो सांकल आकार की होती है जिसको कानों के दोनों ओर बालों में अटका कर पहना जाता है। उसे झेला कहते हैं।

चोटी बंध

यह सिर के पिछले हिस्से के बालों में पहना जाने वाला आभूषण है जो सोने तथा चाँदी दोनों घातुओं में बनाया जाता है तथा इसमें अति सुन्दर जड़ाव कार्य किया होता है।

झूमर

अर्धगोलाकार का यह आभूषण केशों के साईड में पहना जाता है। जिसमें सबसे ऊपर एक सोने का हुक लगा होता है जो नीचे हीरे और मोतियों की पंक्तिनुमा अर्धचन्द्राकार पैनल के साथ जुड़ा होता है। इन सभी शिरोभूषण के अतिरिक्त मैमन्द, फीणी, सांकली, झूमर आदि आभूषण केशों को श्रृंगारित व अलंकारित करने हेतु प्रयोग में लाए जाते हैं।

देवी-देवताओं के आभूषण अलंकरण

हमारी प्राचीन परम्परा में देखे तो आभूषण न केवल कलयुग में मनुष्य से जुड़े हैं, बल्कि सतयुग में देवी-देवताओं से भी समान रूप से जुड़े दिखाई देते हैं। हम देवी-देवताओं की बिना आभूषण कल्पना भी नहीं कर सकते। चित्रों में मूर्तियों में सभी देवी-देवता गहनों से लदे दिखाई देते हैं। देवी-देवताओं को स्वर्ण, रत्नों, मनको, चाँदी से निर्मित आभूषण से ही नहीं बल्कि फूलों-पुष्पहारों से भी सजाया व अलंकृत किया जाता है। चंदन, सिन्दूर, रोली आदि भी देवताओं के प्रिय गहने रहे हैं। मनुष्य ने आभूषणों से केवल अपना ही शृंगार नहीं किया वरन् अपने इष्ट या देवी-देवताओं को भी मानवस्वरूप देकर उसे भी आभूषणों से सुशोभित किया है। तत्कालीन मंदिरों में स्थापित देवी-देवताओं की मूर्तियों से प्रचलित आभूषणों की जानकारी मिलती हैं। देवी-देवताओं के प्रचलित आभूषण इस प्रकार है-

कण्ठाभूषणों में माता त्रिशाला के अतिरिक्त दासी को भी गले मे मटरमाला के समान मोतियों की माला पहिने चित्रित किया है। रूपाकृति की दृष्टि से गोलाकार मोतियों को कपड़े की पट्टी पर जड़ित दिखाया गया है। ऐसा सम्भवतः इसलिए किया गया होगा कि कहीं यह माला टूटकर बिखर ना सके। मोतियों को सदा से ही बहुमूल्य रत्न माना गया है।

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

चित्र सं. **1** *सोती हुई त्रिशाला एवं दासियाँ-कालकाचार्य कथा*, **1375-1400** *ई.,* *मुम्बई के प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम में संग्रहित*

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

चित्र सं. **2** *देवविमान पर आरूढ सफेद मणिमालाओं से सुसज्जित तीर्थकर, कल्पसूत्र सावचूरि,* **1523** *ई. पूर्वार्द्ध, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान-जोधपुर (राज.) के ग्रथांक सं.* **7840** *में संग्रहित*

(क) सिर के आभूषण

- **मुकुट:** यह एक पवित्र, राजकीय, ईश्वर का आदरकारी चिन्ह था। वहीं आदमी अगर पुरोहित है या राज्याधिकारी है तो वह उसकी प्रधानता का प्रतीत बना जाता था। सिन्धुघाटी सभ्यता से प्राप्त शिव पशुपति मोहर जिस पर भगवान शिव सिंग के समान भव्य मुकुट पहने विराजमान है। समय के साथ-साथ देवी-देवताओं को अलंकृत हेतु जो मुकुट पहनाएँ जाते थे उनके अभिकल्पन में अन्तर देखा जा सकता है। ये अन्तर अलंकरण व धातु दोनों का ही था।

- **श्रृंग:** सिंग की भांति मुकुट का उदाहरण सिन्धु घाटी सभ्यता में मोहनजोदड़ो से प्राप्त 'तीन मिट्टी की मोहरे' मिली हैं जिसमें से एक मोहर पर 'पशुओं के बीच बैठे हुए शिव बनाये गये हैं। इन मोहर पर सींगदार मुकुट पहने त्रिनेत्रधारी शिव एक योगी के समान सिंहासन पर बैठे हैं।

- **किरीट मुकुट:** ऊँचाई में अधिक, शिखर के समान, विष्णु द्वारा धारित मुकुट 'किरीट मुकुट' कहलाता है। अजन्ता के भित्ति चित्रों के पद्मपाणि व अवलोक्तिश्वर बोधिसत्व के मुकुट शिखर के समान ऊँचे व भव्य बनाये गये हैं। इन मुकुटों से माथे तक लटकती हुई ये मालाएँ तत्कालीन राजसी अलंकरण को दर्शाती प्रतीत होती है।

- **पंखेनुमा मुकुट:** भगवान कृष्ण द्वारा धारण राजस्थानी व पहाड़ी शैलियों में रत्नों व मोर पंखो से निर्मित 'पंखेनुमा मुकुट का अंकन अत्यधिक रूप में किया गया है। ये मुकुट स्वर्णधातु से बनाए जाते थे जिनके अलंकरण हेतु मोतियों रत्नों का भी प्रयोग किया जाता था।

- **स्तूक/स्तुप:** इस प्रकार के मुकुट भी देवताओं को पहने अंकित किया गया है। यह मुकुट टोपीनुमा कोण के आकार का होता है जिस पर स्वर्ण धातु व मोतियों का अलंकरण किया गया है।

- **जटा मुकुट:** जटाओं द्वारा बनाया गया मुकुट। जो भगवान शिव को पहने हुए अंकित किया गया है। राजस्थानी, पहाड़ी व कालीघट चित्रों में इस मुकुट का अत्यधिक रूप में चित्रण किया गया है।

- **मौली:** पगड़ी की भाँति का मुकुट जो राजस्थानी की उपशैली श्रीनाथ जी को पहने बनाया गया है। जिसके चारों ओर मोतियों की मालाएँ अंकित की गई हैं।

Impact Factor: 6.004

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

- **शीशफूल:** जूड़े के निकट सिर के बगल में लटका कर पहना जाने वाला फूल की आकृति का नक्काशीदार शिरोभूषण। जो देवियों द्वारा शीश पर धारण किया जाता है।

- **माँगफूल:** माँग एवं ललाट की संधि पर पहना जाने वाला आभूषण जो देवियों को पहने दर्शाया है। यह आभूषण रत्नों मोतियों व स्वर्णधातु से अलंकृत किया जाता है।

- **कलंगी:** मुकुट के ऊपर छोटी एवं स्वर्ण धातु से बनी मोतियों से जड़ित आभूषण को कलंगी कहते हैं। जो देवताओं के मुकुट व मौली पर अलंकृत की जाती है।

निष्कर्ष

सिन्धु घाटी सभ्यता के पश्चात् दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से प्राप्त आभूषणों को देखकर यह स्पष्ट होता है कि सिरकप के निवासी अपने केशों को शीर्षपट्टिका और पिनो से सजाते थे कमर पर मछली की पंक्तियों से युक्त मेखला धारण करते थे और अंगुलियों में सुन्दर अंगूठियाँ पहनते थे। यहाँ से प्राप्त आभूषणों में कल्पनामय डिजाइन और सूक्ष्म शिल्पकारिता की विशेषता के कारण जाने जाते हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता व सिरकप-तक्षशिला से प्राप्त आभूषणों के पश्चात् 19वीं व 20वीं शती से प्राप्त अनेकों आभूषणों के उदाहरण हमें मिलते हैं। 19वीं शताब्दी राजा-महाराजाओं का काल था जिसमें हीरे, मोती, पन्ना, माणिक्य व मीनाकारी से युक्त आभूषण अलंकरण किया जाता था। समय के साथ-साथ उनके डिजाइनों में काफी अन्तर आता गया। जैसे नासाभूषण पहले बड़ी नथ के रूप में बनाई जाती थी परन्तु धीरे-धीरे उनका आकार छोटा व रत्नों को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा। आभूषण लोक-संस्कृति के लोकमान्य अंग हैं। सौन्दर्य की बाहरी चमक-दमक से लेकर धातु की भीतरी गुणवत्ता तक और व्यक्ति की वैयक्तिक रूचि से लेकर समाज की सांस्कृतिक चेतना तक आभूषणों का प्रभाव व्याप्त रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. **दास**, **राय कृष्ण** : भारत की चित्रकला, वाराणसी, 1939
2. **दास**, **राय कृष्ण** : भारत की चित्रकला, इलाहाबाद, 1972
3. **दास**, **राय कृष्ण** : मुगल चित्रकला, दिल्ली, 2012
4. **दीक्षा**, **फरहा** : लोक चित्रकला परम्परा और रचना-दृष्टि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर एवं दिल्ली

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

5. **दुबे**, **श्याम सुंदर** : अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन, वाराणसी, 1988

6. **द्विवेदी**, **कपिल देव** : राजस्थानी चित्रकला, वाराणसी, 2012

7. **द्विवेदी**, **प्रेम शंकर** : भारत की चित्रकला, इलाहाबाद, 1969

8. **दास**, **रायकृष्ण** : (विवरण उपलब्ध नहीं)

9. **द्विवेदी**, **प्रेम शंकर** : भारतीय चित्रकला के विविध आयाम, वाराणसी, 2007

10. **धर्मपाल शर्मा** : मेवाड़ संस्कृति एवं परम्परा, उदयपुर, 1999

11. **नायर**, **चन्द्रशेखर** : चित्रकला सम्राट राजा रवि वर्मा, दिल्ली

12. **नीरज**, **जयसिंह** : राजस्थान की लघुचित्र शैलियाँ, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1972

13. **नाथू लाल वर्मा** : राजस्थानी चित्र शैली की विभिन्न चित्रण विधियाँ, जयपुर, 2009

14. **नीरज**, **जयसिंह** : राजस्थानी चित्रकला, जयपुर, द्वितीय संस्करण, 2009

15. **प्रताप**, **रीता** : जयपुर की चित्रांकन परम्परा, जयपुर, 2011

16. **प्रताप**, **रीता** : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, जयपुर, आठवां संस्करण, 2010

17. **प्रकाश बुद्ध** : भारतीय धर्म और संस्कृति, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1968

18. **भारती**, **मीनाक्षी कासलीवाल** : भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, द्वितीय संस्करण, 2011

19. **मिश्र**, **देवी प्रसाद** : जैन, पुराणों का सांस्कृतिक अध्ययन, इलाहाबाद, 1988

20. **मुखर्जी**, **राधाकृष्ण** : भारतीय कला का विकास, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, 1954

21. **मुकन्दीलाल** : गढ़वाल चित्रकला, नई दिल्ली, 1983

Impact Factor: 6.004

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

22. **मावड़ी**, **एम**.**एस**. : भारत की प्रमुख चित्र शैलियाँ, दिल्ली, 1986

23. **मेहता**, **एन**.**सी**. : भारतीय चित्रकला, इलाहाबाद, 1933

24. **रानी**, **अर्चना** : भारत की लोक कलाएँ, मेरठ, 2015

25. **रानी**, **सरोज** : पहाड़ी चित्रकला का अनुशीलन, वाराणसी, 2012

26. **रमानाथ मिश्र** : भारतीय मूर्तिकला का इतिहास, दिल्ली, 2002

27. **राय**, **गोविन्द दास** : वैदिक युग के भारतीय आभूषण, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1965

28. **रागेंय**, **राघव** : प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास, दिल्ली, 1953

29. **रामनाथ** : मध्यकालीन भारतीय कलाएँ एवं उनका विकास, जयपुर, 1973

30. **रानी**, **सुधा** : ग्वालियर भित्ति चित्र शैली का समीक्षात्मक अध्ययन (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध), मेरठ विश्वविद्यालय, 1984

Impact Factor: 6.004